International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 4; Issue 1; January 2018; Page No. 43-48

प्रातिपदिक एवं पद : अर्थ, भेद और संरचना की दृष्टि से अध्ययन

डॉ० चान्दम इङो सिंह
Ph.D. Manipur University, Awang Sekmai, Awang Leikai, Imphal West, Manipur, India

प्रस्तावना

प्रातिपदिक और पद किसी भी भाषा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं। किसी भाषा को अच्छी तरह समझने अथवा अध्ययन करने के लिए शब्द की प्रकृति तथा पद रचना के बारे में अच्छी तरह समझ लेना बहुत ही आवश्यक है। प्रातिपदिक शब्द संरचना से संबंधित है और पद व्याकरण से संबंधित है। प्रातिपदिक कोशीय अर्थ तक ही सीमित है अपितु पद वाक्यार्थ अर्थात् भाषा से संबंधित है। प्रातिपदिक या प्रकृति जब तक रूप साधक प्रत्ययों से मिलकर पद का रूप धारण नहीं करता तब तक वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता नहीं रखते। प्रस्तुत आलेख में प्रातिपदिक और पद के बारे में संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्रातिपदिक

पाणिनि ने शब्दों पर विचार करते हुए शब्द के चार भेद बताये हैं–

1. प्रातिपदिक,
2. धातु,
3. उपसर्ग तथा
4. निपात

उन्होंने संस्कृत व्याकरण 'अष्टाध्यायी' में प्रातिपदिक की परिभाषा इस प्रकार दी है– ''अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्।'' अर्थात् धातु और प्रत्यय से भिन्न कोई सार्थक शब्द को प्रातिपदिक कहते हैं।

भाषाविज्ञान परिभाषा–कोश में प्रातिपदिक की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'व्युत्पत्ति में प्रत्ययों के जुड़ने की प्रक्रिया में अंतिम प्रत्यय छाँटने पर बचा हुआ अंश को प्रातिपदिक कहते हैं।' जैसे– 'सुंदरता' शब्द से 'ता' प्रत्यय छाँटनेके बाद 'सुंदर' शब्द बचता है, यही प्रातिपदिक है। (भाषाविज्ञान परिभाषा–कोश, द्वितीय खंड, पृ. 218)

भाषा विज्ञान में सार्थक मूल शब्द या प्रकृति (जिसमें प्रत्यय जोड़ा जा सके) को ही प्रातिपदिक कहा गया है। प्रातिपदिक का अर्थ है– शब्द का ऐसा रूप जिसके साथ संबंध तत्व न लगाया गया हो यथा– मनुष्य, घर, सुंदर आदि। प्रातिपदिक में प्रत्यय जोड़कर अनेक प्रतिपदिक निर्माण करने की क्षमता भी है। जैसे– मनुष्य से मनुष्यता, मनुष्यत्व। अंग्रेजी में इन्हें stem कहते हैं। इनमें व्युत्पादक प्रत्यय जोड़ने की क्षमता है साथ ही साथ कारक, लिंग, काल, पुरूष, वचन, वाच्य, वृत्ति आदि संबंधतत्व प्रत्यय(रूप साधक प्रत्यय) जोड़ा जा सकता है। संबंध तत्वों से युक्त शब्द ही वाक्य में प्रयोग के लिए उपयुक्त बनते हैं। वाक्य में प्रयुक्त ऐसे शब्दों को ही पद कहलाते हैं।

प्रातिपदिक मूल शब्द (root) भी हो सकते हैं तथा सामासिक अथवा व्युत्पादक शब्द भी। जैसे :–

मूल शब्द : घर, गाय, नदी, गाड़ी आदि।

मूल शब्दों के आपसी मेल से बने(सामासिक) प्रातिपदिक

राष्ट्र + पति = राष्ट्रपति, रासोई + घर = रसोईघर, रेल + गाड़ी = रेलगाड़ी, खेलना + कुदना = खेल–कुद

व्युत्पादक प्रत्यय के योग से बने प्रकृति या प्रातिपदक :

उप + ग्रह = उपग्रह, भारत + ईय = भारतीय, भूख + आ = भूखा, पढ़ + आई = पढ़ाई।

प्रातिपदिक के भेद : प्रातिपदिकों को निम्न वर्गों में बाँटा जा सकता है :

1. संज्ञा प्रातिपदिक : हाथी, घर, ग्रंथ, साधु, लड़का आदि।
2. सर्वनाम प्रातिपदिक : मैं, तू, वह, जो, आप आदि।
3. विशेषण प्रातिपदिक : बड़ा, मोटा, घायल, तपस्वी, तेजस्वी आदि।
4. क्रिया प्रादिपदिक : उड़ना, खेलना, सीना, खोलना, उठाना, उठवाना आदि।
5. क्रिया विशेषण प्रातिपदिक : यहाँ, कल, ऊपर, साथ–साथ, धीरे–धीरे, आस–पास आदि।

मूलांश (root) और प्रातिपदिक(stem)

मूलांश (root) शब्द रचना के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व है। यह शब्द निर्माण का केन्द्र है। यह प्रातिपदिक या पद का आधार भी है। यह रूपिम होता है। अर्थात् इसे और सार्थक छोटे खंडों में विभाजित नहीं किया जा सकता। व्युत्पादित शब्द से मूलांश के निकाल देने से मूलांश के आगे या पीछे लगे प्रत्ययों का कोई कोशीय अर्थ नहीं रह जाता। जैसे– 'बेचैनी' एक शब्द है जो 'चैन' मूलांश के आगे 'बे'(नकारात्मक) और पीछे 'ई'(भावाचक संज्ञा द्योतक) प्रत्यय के लगने से बनता है। 'बेचैनी' शब्द में दो प्रातिपदिक मौजूद हैं– पहला 'चैन' और दूसरा 'बेचैन'। लेकिन इस शब्द में एक ही मूलांश(चैन) है। 'बेचैन' शब्द का प्रातिपदिक 'चैन' है और 'बेचैनी' शब्द या प्रातिपदिक का प्रातिपदिक है 'बेचैन'। अतः कह सकते हैं कि प्रातिपदिक (stem) वह शब्द है जिसमें व्युत्पादक प्रत्यय जोड़ने की क्षमता है। एक और उदाहरण ले सकते हैं– 'सुंदर' एक मूलांश है और यह प्रातिपदिक भी है क्योंकि इसमें व्युत्पादक प्रत्यय जोड़कर अनेक व्युत्पादिक शब्दों या प्रातिपदिकों का निर्माण किया जा सकता है। जैसे– अ + सुंदर = असुंदर, सुंदर + ता = सुंदरता, असुंदर + ता = असुंदरता आदि। 'असुंदर' शब्द में 'सुंदर' मूलांश भी और प्रातिपदिक भी। लेकिन 'असुंदरता' में 'सुंदर' मूलांश है पर प्रातिपदिक नहीं है। इसमें 'असुंदर' प्रातिपदिक है। मूल शब्द और प्रातिपदिक को और स्पष्ट करने के लिए एक और उदाहरण के रूप में अंग्रेजी के शब्द friendship को लिया जा सकता है। यह मूलांश friend में व्युत्पादक प्रत्यय ship

लगाने से बनता है। इसमें फिर बहुवचन बोधक प्रत्यय s लगाने से friendships पद बनता है। इस पद में friendship प्रातिपदिक है और friend मूलांश (root) है। इस प्रकार मूलांश (root) प्रातिपदिक का एक अंग होता है और प्रातिपदिक पद का एक अंग।

पद : अर्थ एवं अवधारणा

शब्द कोश में दिए गए शब्द और वाक्य में प्रयुक्त शब्दों में अन्तर है। वाक्य में प्रयुक्त शब्द आपस में सम्बन्ध स्थापित करता है, अर्थात् वाक्य में प्रयोग होने पर शब्द अपने अर्थ की अभिव्यक्ति के लिए बन्धन में बंध जाता है। वह अपनी स्वतंत्रता खो देता है और अभिष्ट अर्थ की प्रतीति करवाता है। जबकि कोश में प्रयुक्त शब्द स्वतंत्र होता है, यदि वाक्य में प्रयुक्त शब्द एक–दूसरे में संबंध स्थापित न कर पाएँ तो वाक्य बन ही नहीं सकता। इसका अर्थ यह हुआ कि शब्द के दो रूप हैं। एक जो कोश में प्रयुक्त होता है, दूसरा जो सम्बन्ध तत्व से युक्त होता है और वह वाक्य में प्रयुक्त होने के लिए उपयुक्त है। इस प्रकार के वाक्य में प्रयुक्त संबंधतत्वों से युक्त शब्द को ही पद कहलाता है। अंग्रेजी में इसे Morph कहते हैं और पदविज्ञान को Morphology।

भाषा की बड़ी इकाई 'वाक्य' है और वाक्य की इकाई 'पद' है। पदों का निर्माण 'शब्द' एवं रूप साधक प्रत्ययों से तथा शब्द का निर्माण ध्वनियों से होता है। संस्कृत में 'शब्द' का मूल रूप 'प्रकृति' कहा जाता है। यह प्रातिपदिक भी हो सकता है। प्रकृति या प्रातिपदिक के बीच सम्बन्ध स्थापन के लिए जोड़े जाने वाले तत्व को 'प्रत्यय' कहते हैं। वाक्य में न तो प्रकृति का प्रयोग होता है, न प्रत्यय का अपितु उसमें उन 'पदों' का प्रयोग होता है जो प्रकृति और प्रत्यय के योग से बनते हैं। पाणिनि ने 'पद' की परिभाषा देते हुए लिखा है–

'सुप्तिङन्त पदं' अर्थात् 'सुप' और 'तिङ्' जिनके अन्त में हों वे 'पद' है। यहाँ प्रत्यय को ही 'सुप' और 'तिङ्' कहा गया है। उदाहरण के लिए संस्कृत शब्द 'पत्र' लें तो इसका वाक्य में इसी रूप में प्रयोग नहीं होगा वह 'पत्रं' आदि रूप धारण करेगा। यथा– रामः पत्रं पठति' अर्थात राम पत्र पढ़ता है। स्पष्ट है संस्कृत में पत्र प्रातिपदिक है तथा 'पत्रं' पद है। संसार की वे भाषाएँ जो अयोगात्मक है, उनमें शब्द और पद का यह भेद दिखाई नहीं पड़ता।

पतंजली ने पद की परिभाषा इस प्रकार दी है– 'नपि केवल प्रकृतिः प्रयोक्तव्या नापि केवल प्रत्ययः।' अर्थात् वाक्यों में न तो सिर्फ 'प्रकृति' का प्रयोग हो सकता है और न सिर्फ 'प्रत्यय' का दोनों मिलकर प्रयुक्त होते हैं तथा दोनों के मिलने पर जो बनता है वही 'रूप' या 'पद' है।(भाषाविज्ञान, भोलानाथ तिवारी, पृ. 240)

भोलानाथ तिवारी ने 'पद' की परिभाषा इस प्रकार दी है– शब्द को वाक्य में प्रयुक्त होने के योग्य बना लेने पर, उसे 'पद' की संज्ञा दी जाती है। अयोगात्मक भाषाओं में पद नाम की शब्द से कोई अलग वस्तु नहीं होती। वहाँ शब्द स्थान के कारण पद बन जाता है। योगात्मक भाषाओं में पद बनाने के लिए शब्द में सम्बन्धतत्व के जोड़ने की आवश्यकता होती है। (भोलानाथ तिवारी, भाषा विज्ञान, पृ. 241)

डॉ. बाबुराम सक्सेना के अनुसार– 'पद उस ध्वनि समूह को कहते हैं जिसका वाक्य में भाषा की परंपरा के अनुसार संबंधतत्व अथवा अर्थतत्व या दोनों के अर्थबोध कराने के लिए प्रयोग होता है।'

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि प्रकृति या प्रातिपदिक में संबंधतत्व के जोड़ने से पद का निर्माण होता है। किसी वाक्य में प्रयुक्त प्रत्येक छोटे से छोटा ध्वनि समूह, जो सार्थक हो, पद कहलायेगा। इनकी रचना अर्थतत्व और संबंधतत्व के संयोग से होती है। जैसे– लड़कियाँ किताबें पढ़ती हैं।

यहाँ चार पद हैं। 'लड़कियाँ' पद का निर्माण मूल शब्द 'लड़की' में याँ (संबंधतत्व – बहुवचन बोधक प्रत्यय) जोड़कर किया गया है।

अतः स्पष्ट है कि शब्द(प्रातिपदिक) पद रचना का आधार है। शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होने की क्षमता रखता है तब 'पद' कहलाता है। लिंग, वचन, पुरूष, कारक, काल आदि व्याकरणिक अंशों के आधार पर प्रातिपदिक पद में परिवर्तित होता है। यह व्याकरणिक अध्ययन की नींव है।

प्रातिपदिक और पद में अंतर

भाषाविज्ञान में उन शब्दों को 'प्रातिपादिक' कहा गया है जो व्युत्पादक प्रत्यय एवं रूप साधक प्रत्यय जोड़ने की क्षमता रखते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के बीच सम्बन्ध–स्थापन के लिए जोड़े जाने वाले तत्वों को संस्कृत में 'प्रत्यय' या संबंधतत्व कहते हैं। संबंध तत्वों से युक्त वाक्य में प्रयुक्त शब्दों को ही पद कहलाते हैं। पतंजलि कहते हैं– ''नापि केवल प्रकृतिः प्रयोक्तव्या नापि केवल प्रत्ययः''। अर्थात वाक्य में न तो केवल प्रकृति' का प्रयोग हो सकता है, न केवल 'प्रत्यय' का दोनों मिलकर प्रयुक्त होते हैं। दोनों(प्रातिपदिक और प्रत्यय) के मिलने से जो बनता है वही पद है। पाणिनी के 'सुप्तिङन्त पदं'(सुप और तिङ, जिनके अंत में हो वे पद है) में भी पद की परिभाषा यही है। प्रत्यय या विभक्ति को 'सुप' और 'तिङ' कहा गया है। 'सुप' प्रत्यय संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण प्रातिपदिक में लगते हैं। ये कर्ता, कर्म, करण आदि कारकों तथा वचन को बताते हैं। संस्कृत में सुप प्रत्ययों के जुड़ने से तीन वचन तथा आठ कारक विभक्ति के द्वारा पद के चौबीस रूप बनते हैं, इसे ही 'सुवन्त' कहते हैं। 'तिङ्' प्रत्यय क्रिया धातुओं में लगते हैं।(धातु + तिङ् प्रत्यय = तिङन्त) तिङ् प्रत्यय लगने पर ही वाक्य में उनका प्रयोग हो सकता है। इनसे काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य और वचन आदि का बोध कराया जाता है। संस्कृत में धातुओं में तिङ् प्रत्यय जुड़कर तीन पुरूष तथा तीन वचनों के द्वारा नौ क्रियारूप बनाते हैं, इसे ही 'तिङन्त' कहते हैं।

प्रातिपदिक और पद में अंतर को और स्पष्ट करने के लिए उदाहरण के रूप में 'पत्र' शब्द को लिया जा सकता है। यह एक शब्द मात्र है। संस्कृत भाषा के किसी भी वाक्य में इसका प्रयोग करना चाहे तो इसी रूप में इसका प्रयोग नहीं हो सकता। वैसा करने के लिए इसमें कोई सम्बन्ध–सूचक विभक्ति जोड़नी होगी। जैसे 'रामः पत्रं पठति' अर्थात राम पत्र पढ़ता है। अतः स्पष्ट है कि मूल शब्द या प्रकृति 'पत्र' है और वाक्य में प्रयोग करने के लिए उसे 'पत्रं' का रूप धारण करना पड़ा। अतः 'पत्र' प्रातिपदिक है और 'पत्रं' पद। चीनी जैसी अयोगात्मक स्थान–प्रधान भाषाओं में शब्द और पद का यह भेद दिखाई नहीं पड़ता क्योंकि वहाँ शब्दों का सम्बन्ध दिखाने के लिए किसी सम्बन्ध तत्तव की आवश्यकता नहीं पड़ती। शब्द के स्थान से ही वाक्य में प्रयुक्त शब्दों के बीच का संबंध स्पष्ट हो जाता है।

कभी–कभी वाक्य में प्रयुक्त पदों में संबंध तत्व ऊपर से दिखाई नहीं देता किन्तु रहता अवश्य है। जैसे 'बालक दौड़ता है।' इस वाक्य में बालक 'पद' है। 'बालक' प्रातिपदिक अथवा प्रकृति तत्व है, लेकिन इस वाक्य में प्रत्यक्षतः उसी रूप में प्रयुक्त होते हुए भी वह संबंधतत्वों– एक वचन पुल्लिंग, अविकारी कर्ता भाव से युक्त है यद्यपि ऊपर से देखने में लगता है, इसमें कुछ भी नहीं जुड़ा है। एक अन्य उदाहरण और दृष्टव्य –

'बैल चर रहा है।'　　बैल चर रहे हैं।'

उपर्युक्त दोनों वाक्यों में 'बैल' शब्द का प्रयोग किया गया है। लेकिन प्रथम वाक्य के 'बैल' और दूसरे वाक्य में प्रयुक्त बैल में अंतर है। प्रथम वाक्य के 'बैल' अपने में एक वचनत्व तथा वर्तमान कालिक एक वचन की क्रिया 'चर रहा है' का कर्तृत्व छिपा है। अतः प्रयोग में आते–आते शब्द प्रकृति–प्रत्यय युक्त हो गया है। उसी तरह दूसरे वाक्य में प्रयुक्त **बैल** पद में बहुवचनत्व तथा वर्तमान कालिक बहुवचन की क्रिया 'चर रहे हैं' का कर्मत्व छिपा है। स्पष्ट है प्रातिपदिक पद का आधार है, यह पद का एक अंग है और पद वाक्य का एक अंग।

संबंधतत्व ओर अर्थतत्व

किसी भी वाक्य में दो तत्व होते हैं– 1. संबंध तत्व और 2. अर्थ तत्व। दोनों में अर्थतत्व प्रधान है। संबंध तत्व का कार्य विभिन्न अर्थ तत्वों को आपस में संबंध दिखाना है। जैसे– राम ने रावण को बाण से मारा। इस वाक्य में चार अर्थ तत्व हैं– राम, रावण, बाण और मारना। वाक्य बनाने के लिए चारों अर्थतत्वों में संबंधतत्व की आवश्यकता पड़ेगी, अतः यहाँ चार संबंध तत्व भी है। 'ने' संबंध तत्व वाक्य में राम का संबंध दिखाता है। इसी प्रकार 'को' और 'से' क्रम से रावण और बाण का संबंध द्योतित कर रहे हैं। मारना से 'मारा' पद बनाने में संबंध तत्व इसी में मिल गया है। इस प्रकार योगात्मक भाषाओं में संबंधतत्व वाक्य के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण अंग होता है। इसे पद साधक प्रत्यय भी कह सकते हैं।

अर्थतत्व मुक्त रूपिम होता है। इसे प्रकृति या प्रातिपदिक के नाम से भी अभिहित किया जाता है। इसका संबध कोशगत अर्थ से है। संबंधतत्व बद्ध रूपिम होता है। इसको व्याकरणिक तत्वों में इस प्रकार बाँटा जाता है– लिंग, वचन, पुरूष, काल, कारक, पक्ष, वृत्ति और वाच्य। कांतिलाल व्यास के शब्दों में 'संबंधतत्व ऐसे ध्वनि घटक है जो वाक्य में प्रयुक्त शब्द, नाम, विशेषण या क्रियापद आदि को दर्शाते हैं तथा व्याकरणिक स्वरूप (Grammatical category) अर्थात् जाति, वचन, पुरूष, प्रकट करते हैं और वाक्य में अन्य शब्द के साथ उनका संबंध सूचित करते हैं।'(भाषाविज्ञान, कांतिलाल ब. व्यास, पृ. 259)

संबंध तत्व के प्रकार :

1. **शब्द–स्थान (पद क्रम):** कभी–कभी शब्द का स्थान भी संबंध तत्व का काम करता है। संस्कृत के समासों में प्रायः यही बात देखी जाती है। उदाहरण के लिए –

   राजासदन – राजा का घर,
   सदनराज – घरों का राजा अर्थात बहुत बड़ा घर
   धनपति – धन का पति(कुबेर),
   पतिधन – पति का धन
   बिल्ली चूहा खाती है। – चूहा बिल्ली खाता है।
   राम ने रावण को मारा। – रावण ने राम को मारा।

2. **शून्य तत्व :** पाणिनी के अनुसार सभी शब्दों में सुप का विधान करके पद बनाया जाता है। लेकिन अव्यय शब्दों के साथ सुप का लोप बताया जाता है। इस प्रकार अव्ययों में सम्बन्धतत्व शून्य रूप में रहता है। अंग्रेजी में शून्य तत्व को Zero Morpheme कहते हैं।

शून्य तत्व का अभिप्राय है कि शब्द या धातु अपने मूल रूप में रहते हुए व्याकरण के सम्बन्धों को बताते हैं, जैसे– लड़का स्कूल जाता है। यहाँ 'लड़का' शब्द अपने मूल रूप में है लेकिन यह एकवचन, कर्तृत्व का बोध कराता है। इसलिए इसमें शून्य तत्व माना जायेगा। हिंदी में आज्ञा अर्थ में क्रियापद प्रायः मूलरूप में रहते हैं। जैसे :– आ, जा, खा, चल, उठ, पूछ। माध्यम पूरूष एक वचन आज्ञा अर्थ के रूप हैं। जैसे– तू आ, तू पढ़ आदि। अंग्रेजी में सामान्य वर्तमान में प्रथम पुरुष एकवचन (I go) तथा सभी बहुवचनों (We go, You go, They go) में क्रिया पद अविकारी रूप में रहती हैं। संस्कृत में भी ऐसी बहुत सारी संज्ञा शब्द(जैसे– मरुत, वारी, दधी, विद्या, नदी, विद्युत आदि) हैं, वाक्य में जिनका अविकृत रूप ही प्रथमा एकवचन का बोधक है। ऐसे रूपों को ही शून्य तत्व या शून्य रूपिम युक्त पद कहा जाता है।

अंग्रेजी में एकवचन और बहुवचन में Sheep, Deer ही होता है। I go, We go, You go, They go. इन वाक्यों में क्रिया go के साथ सम्बन्धतत्व नहीं है। अतः इसे शून्य तत्व कहते हैं।

स्वतंत्र शब्द

विश्व की अनेक भाषाओं में स्वतंत्र शब्द सम्बन्धतत्व का काम करते हैं, जैसे– संस्कृत में– इति(उस तरह), च(और), वा(अथवा) आदि।
हिंदी में– कारक चिह्न 'ने, को, से, द्वारा, का, पर आदि।

अंग्रेजी में– To(को), from(से), in(में), on(पर), upon(पर), with(से)

चीनी भाषा में– कारक चिहन् आदि के वाचक शब्द– मेन(बहुवचन चिह्न), ति(का), त्सुंग(से) आदि। चीनी भाषा में पूर्ण(full) और रिक्त(empty) दो प्रकार के शब्द होते हैं, सम्बन्धतत्व वाले शब्द रिक्त शब्द होते हैं। (कपिलदेव द्विवेदी, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, पृ. 259),

ध्वनि–द्विरुक्ति(Reduplicating)

अनेक भाषाओं में पूरे अंग या उसके अंश की द्विरुक्ति या आवृत्ति सम्बन्धतत्व का काम करती है। संस्कृत में धातु आदि की द्विरुक्ति से अर्थ में अंतर हो जाता हैं। जैसे– दृश्य(देखना)–ददर्श(देखा), पठ् (पढ़ना)–पपाठ (पढ़ा), लिख्–लिलेख(लिखा)। (कापिलदेव द्विवेदी, भाषा–विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, पृ. 261) इसी प्रकार अफ्रिका की एक भाषा में irik = चलता और irikrik = वह चलता है। (भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, पृ. 244)

पूर्व प्रत्यय

संबंधतत्व के रूप में पूर्व प्रत्यय का प्रयोग बहुत कम मिलता है। संस्कृत भूतकाल की क्रियाओं में 'अ' आरम्भ में लगाते हैं, जैसे अगच्छत, अचोरयत् अफ्रीका की बंटू कुल की काफिर भाषा में यह प्रवृत्ति विशेष देखी जाती है। उदाहरणार्थ 'कु' वहाँ सम्प्रदान कारक का चिह्न है। 'ति' = हम, नि = उन। कुति = हमको ; कुनि = उनको। (भोलानाथ तिवारी)

अन्तःप्रत्यय

संस्कृत में अन्तःप्रत्यय या मध्यसर्ग का संबंधतत्व के रूप में प्रयोग बहुत अधिक मिलते हैं। जैसे– रुध से रुणद्धि (रोकता है), रुन्ध(तुम लोग रोकते हो) आदि। इस प्रकार के उदाहरण मुण्डा भाषा में भी मिलते हैं। जैसे– दल(मारना) – दपल(परस्पर मारना)। हिंदी में इस प्रकार के उदाहरण नहीं मिलते हैं।

परप्रत्यय

शब्दों या धातुओं के अंत में जुड़ने वाले प्रत्यय परप्रत्यय कहलाते

हैं। इसका प्रयोग सबसे अधिक होता है। संस्कृत में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया के रूपों के बनने में प्रायः इसी का प्रयोग होता है। राम + : रामः, फल + ं = फलं। हो धातु से होता, उस से उसने आदि। हिंदी में भी इसका प्रयोग खुब होता है। 'हो धातु से होता, उस से उसने। अंग्रेजी क्रिया में (ed, -ing) से बनने वाले रूप भी इस श्रेणी के है।

बलाघात या सुर

बलाघात या सुर भी सम्बनघतत्व का काम करते हैं। सुर का उदाहरण चीनी तथा अफ्रीकी भाषाओं में मिलता हैं अफ्रीकी की 'फूल' भाषा से एक उदाहरण लिया जा सकता है। उनमें 'मिवरत' यदि एक सुर में कहा जाय तो अर्थ होगा 'मैं मार डालूँगा' पर यदि 'त' सुर उच्च हो तो अर्थ होगा 'मैं नहीं मरूँगा।'(भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, पृ. 245)

संबंध तत्व के कार्य :

भाषा में संबंध तत्व मुख्यतः काल, लिंग, पुरूष, वचन तथा कारक आदि की अभिव्यक्ति होती है।

काल

काल से क्रिया के व्यापार का समय तथा उसकी पूर्ण व अपुर्ण अवस्था का बोध होता है। काल के सामान्यतया तीन भेद होते हैं– (1) वर्तमान, (2) भूत, (3) भविष्य। क्रिया में विभिन्न प्रकार के सम्बन्धतत्व जोड़कर ही विभिन्न काल प्रकट करते हैं। जैसे– वह आ रहा है।(वर्तमान), वह आयेगा।(भविष्य), राम आया।(भूत), अंग्रेजी में he walked(भूत), he shall go आदि।

लिंग

इससे यह पहचाना जाता है कि शब्द की जाति 'स्त्री' है या 'पुरुष'। प्राकृतिक लिंग दो हैं– स्त्रीलिंग और पुल्लिंग। लिंग का भाव व्यक्त करने के लिए प्रमुख रूप से दो तरीके भाषा में अपनाए जाते हैं–

1) प्रत्यय जोड़कर– जैसे हिंदी में बाघ से बाघिन, हिरन से हिरनी, लड़का से लड़की या कुत्ता से कुतिया। अंग्रेजी में प्रिंस(prince) से प्रिंसेस(princess) या लायन(lion) से लाइनेस(lioness) भी इसी प्रकार के उदाहरण हैः संस्कृत में सुन्दर से सुन्दरी भी इसी श्रेणी का है।
2) स्वतंत्र शब्द साथ में रखकर– जैसे अंग्रेजी में शी–गोट(बकरी) – ही–गोट(बकरा) ; या मणिपुरी में हामेङ् अमोम – हामेङ् लाबा, इसी प्रकार हिंदी में लिंग बोध कराने के लिए नर और मादा का प्रयोग किया जाता है। जैसे– मादा चीता – नर चीता।

पुरुष

पुरुष तीन प्रकार के होते हैं– उत्तम, मध्यम तथा अन्य। पुरूष के आधार पर क्रिया के रूपों में परिवर्तन होता है। पर यह स्थिति संसार की सभी भाषाओं में नहीं पाई जाती। एक ओर संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी आदि में यह स्थिति है तो दूसरी ओर मणिपुरी आदि तिब्बतो बर्मन भाषा परिवार की भाषाओं में पुरुष के आधार पर क्रिया के रूपों में कोई परिवर्तन नहीं होता। जैसे–

हिंदी

एक वचन		बहुवचन
मैं जाता हूँ।	–	हम जाते हैं।
तू जाता है।	–	तुम जाते हो।
वह जाता है।	–	वे जाते हैं।

संस्कृत

एक वचन		बहुवचन
अहम् गच्छमि।	–	तवं गच्छामः।
त्वम् गच्छसि।	–	यूयं गच्छथ।
सः गच्छति।	–	ते गच्छति।

अंग्रेजी

Singular		Plural
I go.	–	We go.
You go.	–	You go.
He goes.	–	They go.

मणिपुरी

(मणिपुरी में पुरुष के आधार पर क्रिया के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता।)

एकवचन		बहुवचन
ऐ चत्लि।	–	ऐखोय चत्लि।
नङ चत्लि।	–	नखोय चत्लि।
महाक चत्लि।	–	मखोय चत्लि।

अंग्रेजी में अधिकांशतः अन्य पुरुष एक वचनत में अंतर होता है। जैसे– He goes, He walks.

वचन

वचन प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते हैं– एकवचन और बहुवचन। संस्कृत आदि कुछ भाषाओं में द्विवचन तथा कुछ अफ्रीकी भाषाओं में त्रिवचन का प्रयोग भी मिलता है।(भोलानाथ तिवारी, भाषाविज्ञान, पृ. 249) वचन का ध्यान प्रायः संज्ञा, सर्वनाम तथा क्रिया में रखा जाता है, पर संस्कृत आदि कुछ प्राचीन भाषाओं में तथा हिंदी आदि में विशेषण में भी इसका ध्यान रखा जाता रहा है। बहुवचन के भावों को व्यक्त करने के लिए प्राय एकवचन रूप में (हिंदी में ओं या याँ या यों आदि, अंग्रेजी में es या s आदि तथा संस्कृत में औ, जस्(अः) आदि, मणिपुरी में सिङ् या खोय या याम आदि) लगाते हैं। जैसे–

हिंदी

एक.		बहु.
लड़का	–	लड़के, लड़कों
लड़की	–	लड़कियाँ, लड़कियों।

संस्कृत

एक.		द्वि.		बहु.
बालक	–	बालके	–	बालकः
बालिका	–	बालिके	–	बालिकाः

अंग्रेजी

Singl.		Plu.
Boy	–	Boys
Girl	–	Girls
Fish	–	Fishes

कभी–कभी अपवादस्वरूप समूहवाची स्वतंत्र(गण, वर्ग, जन आदि) शब्द भी जोड़े जाते हैं। जैसे– श्रोतागण, पाठकवर्ग, भक्तजन

आदि।
हिंदी के कुछ शब्द सदैव बहुवचन में ही प्रयुक्त होते हैं, जैसे– प्राण, दर्शन, आँसू, हस्ताक्षर, होश आदि।(डॉ. अशोक तिवारी, भाषाविज्ञान एवं हिंदी भाषा, पृ. 31)

मेरे प्राण निकल गये।
उसके आँसू निकल पड़े।
मैंने हस्ताक्षर कर दिये।
उसके होश उड़ गये।
देवी के दर्शन हो गये।

इसके विपरीत कुछ शब्द नित्य एकवचन हैं, जैसे– जनता, सामान, सामग्री, सेना, माल, पानी आदि। जैसे–

जनता भूल गई।
सामान चोरी हो गया।
सामग्री जलकर नष्ट हो गई।
माल लूट गया।
पानी बहा रहा है।

कारक

वाक्य के विभिन्न पद परस्पर वैयाकरणिक संबंधों से जुड़े होते हैं तभी उनसे अर्थबोध हो पाता है। यह व्याकरणिक संबंध कारक कहलाता है। इसी के फलस्वरूप वाक्य का कोई पद कर्ता की भूमिका में होता है, कोई कर्म की, कोई पूरक, कोई क्रिया और कोई की। इन्हीं की सहायता से ही हमें किसी भी वाक्य का ठीक अर्थबोध होता है।
संस्कृत व्याकरण के अनुसार सात कारक माने गए हैं। कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण और सम्बोधन। सम्बन्ध कारक को कारक नहीं माना जाता है, क्योंकि क्रिया की सिद्धि में उसका साक्षात् योग नहीं होता है। जैसे– राजा का पुरुष आता है, इसमें राजा का सम्बन्ध पुरुष से है, न कि क्रिया से। कुछ प्राचीन आचार्यों ने सम्प्रदान और अपादान को भी क्रिया से साक्षात् सम्बद्ध न मानकर कारकों की संख्या केवल चार मानी है। अतएव कारकत्व की पहचान 'कृ' धातु केवल चार कारकों में है– कर्ता, कर्म, करण, अधिकरण। हिंदी में आठ कारक होते हैं– कर्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, अधिकरण, सम्बन्ध और सम्बोधन।(कापिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, पृ. 273)
वाक्य में कारक संबंधों की सूचना हमें दो प्रकार से मिलते हैं, पहला कारक परसर्गों से (जैसे– ने, को, में, से, के लिए) और दूसरा पद के प्रयोग स्थान से (जैसे– हिंदी में वाक्य– कर्ता + कर्म + क्रिया, अंग्रेजी वाक्य– कर्ता + क्रिया + कर्म)

पद–भेद

यास्क ने अपनी रचना 'निरूक्त' में पद को चार भागों में विभक्त किया है। यास्क के शब्दों में –''चत्वरि पदजातिनि नामख्याते चोपसर्गनिपाताश्च''। अर्थात् नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात ये चार पद है। इसको आधुनिक ढंग से इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

1. नाम– संज्ञा शब्द(राम, बालक, गाय) – नामपद से लिंग, वचन तथा कारक द्योतित होते हैं।
2. आख्यात– क्रिया शब्द (जाना, खाना आदि) – क्रिया पद से पुरूष, लिंग, काल, पक्ष, वृत्ति तथा वाच्य द्योतित होते हैं।
3. उपसर्ग – सम्बद्ध अव्यय (प्र, उप, सम् आदि)
4. निपात – अव्यय शब्द (च, वा, इव, हि, और, तथा आदि)

समान्यतया पद के ये चार भाग प्रतिशाख्य आदि ग्रंथों में भी स्वीकार किए गए हैं। पतंजली ने अपने 'महाभाष्य' के प्रथम आह्विक में ऋग्वेद के दो मंत्र अर्थात 'चत्वरिऋृंगा' और 'चत्वारि वाकपरिमितापदानि' उद्धृत किए हैं और इनका भाव स्पष्ट करते हुए नाम, आख्यात, उपसर्ग और निपात ये पद के चार भाग वैदिक ऋषियों के अभिष्ट बताए हैं।[1](कपिलदेव द्विवेदी, अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन, पृ. 263)
पाणिनि ने 'सुपतिङन्त पदम्' में पद को केवल दो भागों में विभाजित किया है। सुवन्त(नाम), तिङन्त(आख्यात अर्थात क्रिया)।
भर्तृहरि ने वाक्यपदीय में विशेष रूप से उल्लेख किया है कि प्राचीन दो आचार्य वार्ताक्ष और औदुम्बरायण पद के दो ही विभाग(नाम और आख्यात) मानते थे।[1](कपिलदेव द्विवेदी, भाषाविज्ञान एवं भाषा शास्त्र, पृ. 267) यदि वास्तविक दृष्टि से विचार किया जाय तो नाम और आख्यात यही दो तत्व मुख्य हैं। उपसर्ग स्वतंत्र रूप से अर्थ के वाचक नहीं हैं, अपितु निर्बद्ध (बद्ध) होकर ही अर्थ के द्योतक है। अतः वैयाकरणों ने उपसर्ग को वाचक न मानकर केवल द्योतक माना है। इसमें कोई परिवर्तन नहीं होता है, अतः इसे अव्यय कहते हैं। उपसर्ग और निपात में अंतर यह है कि निपात का प्रयोग स्वतंत्र भी हो सकता है। पाणिनि ने उपसर्ग और निपात को भी सुवन्त में लिया है। अतः इनके बाद की कारक विभक्तियों का लोप दिखाया है।
हिंदी में आचार्य किशोरीदास वाजपेयी ने 'हिंदी शब्दानुशासन' में पद के दो भेद बताये हैं– नाम ओर आख्यात– संज्ञा तथा क्रिया।
हिंदी के प्रसिद्ध वैयाकरण कामताप्रसाद गुरू ने पद के आठ प्रकार बताये हैं– संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, संबंधसूचक, समुच्चयबोधक तथा विस्मयादिबोधक। [1](कामता प्रसाद गुरु, हिंदी व्याकरण, पृ. 57)

ग्रीस दार्शनिक प्लेटो ने पद के दो भेद बताये हैं

1. ओनोमा(Onoma) तथा
2. रेमा(Rhema)

जो क्रमशः नाम' तथा 'क्रिया के सूचक है।
बाद में अरस्तू ने इसमें एक तीसरा भेद भी जोड़ दिया– 'सिंडेसम्याय' इसमें इन्होंने संबंधसूचक, संयोजक तथा सर्वनाम को लिया।

ग्रीक वैयाकरण डायोनिसियस थ्रैक्स ने पद के आठ भेद बताये हैं

1. ओनोमा(Onoma),
2. रेमा (Rhema),
3. मेटोक(Metoche),
4. आर्थ्रन(Athron),
5. ऐनटोनिमिया(Antonymia),
6. प्रोथीसिस(Prothesis),
7. एपिरेमा(Epirrhema),
8. सिंडेस्मास(syndesmos)[2]

(R.H. Robinson: A short History of Linguistics, P. 57, 58 Edn. 1976)

हिंदी में इनका पर्याय इस प्रकार हैं– संज्ञा, क्रिया, कृदंत, आर्टिकल, सर्वनाम, संबंधसूचक, क्रियाविशेषण और संयोजक है।
भाषाशास्त्र की दृष्टि से पाणिनि का पद–विभाजन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। संज्ञा और क्रिया, ये दो ही मुख्य हैं। व्यवहारिक सुविधा

के लिए ही नाम से उपसर्ग और निपात को पृथक् किया गया है।(कपिलदेव द्विवेदी भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र, पृ. 268)

अंग्रेजी का पद–विभाजन वस्तुतः लैटिन से लिया गया है। यह विभाजन अंग्रेजी के लिए भी संगत नहीं माना जाता है। परम्परा के आधार पर, अनावश्यक एवं अनुपयुक्त होने पर भी, यह आठ प्रकार का पद–विभाग हिंदी में माना जाता है। वस्तुतः इन आठ विभागों को तीन विभागों में समाहित किया जा सकता है।

1. **नाम :** संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण। ये संज्ञा के ही विभिन्न रूप हैं। नाम में इनका अन्तर्भाव होता है। पाणिनि ने इनको सुवन्त में रखा है।
2. **आख्यात या तिङन्त :** क्रिया शब्द।
3. **अव्यय :** इसमें क्रिया विशेषण (जब, तब, कहाँ, जैसा आदि), सम्बन्धसूचक(को, ने, में, से आदि), समुच्चय–बोधक(और, अथवा, किन्तु, तथा आदि), विस्मयादिबोधक(ओह, आह, छि, अरे आदि), ये चारों भेद समाहित होते हैं। इस प्रकार आठ भेदों को तीन भेदों में लिया जा सकता है।[3] (कपिलदेव द्विवेदी, भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, प. 268)

निष्कर्षतः

उपर्युक्त अध्ययन से पद संबंधित निम्न बातें उल्लेखनीय है –

1. पद भाषा की एक महत्वपूर्ण व्याकरणिक संरचना है।
2. अर्थ की दृष्टि से यह भाषा में प्रयुक्त सबसे छोटी इकाई है। जैसे– 'घर' यह सबसे छोटी अर्थवान इकाई है क्योंकि इसे और अर्थवान इकाइयों में विभाजन नहीं हो सकता।
3. पद संरचना में अर्थतत्व और संबंधतत्व दोनों का योग होता है तथा जहाँ पर संबंधतत्व प्रत्यक्ष नहीं दिखाई देता वहाँ पर शून्य प्रत्यय होता है।
4. पद वाक्य विश्लेषण का आधार है। यह भाषा की संरचनात्मक आंतरिक व्यवस्था है।
5. पद रचना के व्यापकतम अंग प्रकृति(प्रातिपदिक) और प्रत्यय हैं तथा प्रत्यय हमेशा प्रकृति के साथ परिपूरक रूप में आते हैं।
6. पद रचना के द्वारा प्रत्येक भाषा की व्यवस्था को जाना जा सकता है।
7. प्रत्येक भाषा की अपनी–अपनी अलग–अलग पद रचना की पद्धति होती है।
8. अयोगात्मक भाषा जैसे चीनी आदि भाषाओं में पद और शब्द(प्रकृति) के बीच कोई अंतर नहीं होता।

संदर्भ ग्रंथ

1. आचार्य किशोरीदास वाजपेयी(2008), भारतीय भाषा विज्ञान, वाणी प्रकाशन, 21–ए, दरियागंज, नयी दिल्ली–110002
2. उदय नारायण तिवारी(1978), भाषाशास्त्र की रूपरेखा, भारती भंडार, लीडर प्रेस, इलाहबाद
3. कपिलदेव द्विवेदी, अर्थवि ज्ञान और व्याकरण दर्शन, पृ. 263
4. कामताप्रसाद गुरु(2008) हिंदी व्याकरण, लोकभारती पुस्तक विक्रेता तथा वितरक, इलाहाबाद–211001
5. गरिमा श्रीवास्तव, भाषा और भाविज्ञान, संजय प्रकाशन, 4378/4 डी 209 जे.एम.डी. हाऊस अंसारी रोड. दरियागंज, नई दिल्ली– 110002
6. चतुर्भुज सहाय (2007) हिंदी पद विज्ञान, कुमार प्रकाशन, 8/153, जे/2 न्यू लॉयर्स कालोनी, आगरा–282005
7. डॉ. कपिलदेव द्विवेदीः भाषा विज्ञान एवं भाषा शास्त्र, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वारणासी–221001
8. डॉ. जाल्मन दीमशितस(1983), हिंदी व्याकरण, रादुगा प्रकाशन, मास्को, हिंदी अनुवादक– योगेन्द्र नागपाल
9. डॉ. भोलानाथ तिवारी(2009), भाषा विज्ञान, किताब महल, 22–ए, सरोजनी नायडू मार्ग, इलाहबाद
10. डॉ. रामकिशोर शर्मा(2007), भाषाविज्ञान हिंदी भाषा और लिपि, लोकभारती प्रकाशन, पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गाँधी मार्ग, इलाहबाद– 1
11. डॉ. राजमणि शर्मा, आधुनिक भाषा–विज्ञान, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली– 110002
12. डॉ.लक्ष्मीनरायण शर्मा, हिंदी के वाक्य–सॉचे, सात्साहित्य–सदन, आगरा–4
13. डॉ. विश्वनाथ प्रसाद, भाषा (ब्लूमफील्ड की 'लैंग्वेज' का अनुवाद), प्रकाशक– मोतीलाल बनारसीदास, दिल्लीः वाराणसीः पटना
14. देवेन्द्रनाथ शर्मा(1966), भाषाविज्ञान की भूमिका, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, 2/38, अंसारी मार्ग दरियागंज नइ दिल्ली– 110002
15. न. वि. राजगोपालन (1997) हिंदी का भाषावैज्ञानिक व्याकरण, केन्द्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
16. मुरारी लाल उप्रैति(1964), हिंदी में प्रत्यय विचार(हिंदी आबद्ध रूपों का वर्णनात्मक अध्ययन), विनोद पुस्तक मन्दिर, हास्पिटल रोड, आगरा
17. राजमल बोरा, भाषा विज्ञान, नेशनल पब्लिशिंग हाडस 2135 अंशारी रोड दरियागंज नई दिल्लि।
18. लक्ष्मीनरायण शर्मा (1979) हिंदी–संरचना का अध्ययन–अध्यापन, केद्रीय हिंदी संस्थान,आगरा
19. Robinson RH. A short History of Linguistics, 57-58-197.